Q6. स्पीनोजा के विस्थापन या विकारवाद सिद्धान्त की समीक्षात्मक व्याख्या करें।

Ans :→ आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में स्पीनोजा का स्थान सर्वश्रेष्ठ दार्शनिकों में से एक माना जाता है क्योंकि आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में विश्व का सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक के रूप में माना गया। स्पीनोजा दार्शनिक मध्ययुग और आधुनिक युग के मध्य कड़ी है। स्पीनोजा में विकार और विस्थापन के सम्बन्ध में विश्व के रूपों में व्याख्या की है। स्पीनोजा के अनुसार मॉड्स (Modes) पर्याय, विकार, विस्थापन द्रव्य के परिणामी धर्म है। इनका अस्तित्व निरपेक्ष नहीं बल्कि सापेक्ष है। ये द्रव्य सापेक्ष है, क्योंकि द्रव्य के बिना इसका ज्ञान नहीं हो सकता। विकार या विस्थापन पदार्थ का रूपान्तर है तथा यह एक धर्म है जिन्हे ये किसी धर्मी की अपेक्षा विकार या विस्थापन प्रकार स्वतंत्र नहीं परतंत्र माने गये है। द्रव्य या पदार्थ वह है जिसका अस्तित्व व ज्ञान निरपेक्ष हो परन्तु विकार या पर्याय की सत्ता तथा ज्ञान दोनों सापेक्ष है। पर्याय के इस स्वरूप से ज्ञात होता है कि पर्याय द्रव्य के विकार है। लेकिन "स्पीनोजा के अनुसार विकार द्रव्य निर्विकारी, अपरिणामी बतलाया गया है।" स्पीनोजा ने अपनी पुस्तक 'The Ethics' में कहा है कि पर्याय या विकार द्रव्य में विस्थापन नहीं उत्पन्न कर सकते बल्कि पर्याय गुणों का विकार है।

स्पीनोजा ने विश्व की व्याख्या करते हुए कहा है कि ईश्वर एक अद्वितीय, नित्य अपरिणामी है परन्तु विश्व अनेक, अनित्य, व परिणामी है। इसी अनित्य तथा अपरिणामी विश्व की व्याख्या के लिए स्पीनोजा ने विकार-सिद्धान्त को अपनाया है क्योंकि ईश्वर एक, अनन्त होते हुए भी पर्यायों के माध्यम से ही विश्व में अभिव्यक्त होता है। जिस प्रकार शरीर में परिवर्तन परिवर्तन होते हुए भी शरीर की आकृति एक-सी रहती है उसी प्रकार समस्त आकृति में परिवर्तन होते हुए भी उसका स्वरूप नहीं रहता है।

स्पीनोजा के अनुसार पर्याय या विकार दो प्रकार के होते है:- (i) अनन्त और (ii) सान्त। अनन्त ईश्वर का स्वरूप होने के कारण पर्याय भी अनन्त है परन्तु व्यक्तिगत रूप में पर्याय सान्त है। पर्याय के स्वरूप के

सम्बन्ध में यहीं एक विषमता उत्पन्न होती है। एक ओर ईश्वर का स्वरूप होने के कारण पर्याय को अनन्त तथा निरपेक्ष बतलाया गया है एवं दूसरी ओर व्यक्तिगत रूप में पर्याय को अनित्य तथा सापेक्ष माना गया है।

स्पीनोजा के अनुसार पर्याय या विकार को नित्य करने का तात्पर्य यह है कि पर्याय अकारण नहीं। वन्ध्यापुत्र के समान मिथ्या पदार्थ भी नहीं। अभिव्यक्ति के अर्थ में द्रव्य ही पर्याय का कारण है। ईश्वर विश्व का कारण है, परन्तु व्यक्तिगत स्वरूप की दृष्टि से इसकी सत्ता नित्य नहीं। अतः पर्यायों का नित्य स्वरूप, ईश्वर स्वरूप का द्योतक तथा इनका अनित्य स्वरूप विश्व के विभिन्न पदार्थों का द्योतक है। विश्व की व्याख्या पदार्थ को माने बिना सम्भव नहीं। निराकार ईश्वर पर्याय के माध्यम से विश्व में प्रतीत होता है।

इस प्रकार स्पीनोजा के निम्नलिखित विकार सिद्धान्त या विस्थापन सिद्धान्त है —

1. आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में स्पीनोजा का विकार सिद्धान्त का सम्बन्ध द्रव्य से है क्योंकि विकार द्रव्य का रूपान्तर है लेकिन पदार्थ किसी का रूपान्तर नहीं है क्योंकि स्पीनोजा के तत्वमीमांसा में द्रव्य और विकार दोनों का सम्बन्ध स्थापित होता है। स्पीनोजा का कहना है कि द्रव्य का तात्पर्य जो अपने में रहता है और अपने द्वारा ही समझा जाता है अर्थात द्रव्य वह है जिसको समझने के लिए किसी अन्य वस्तु को समझने की आवश्यकता नहीं होती है। जिससे वह अवश्य बना हो स्पीनोजा के अनुसार विकार से मेरा अभिप्राय: द्रव्य की विक्रियाएं अथवा विकार वह है जो दूसरी वस्तु में रहता है और उसके द्वारा समझा भी जाता है। इस विकार का द्रव्य सिद्धान्त के सम्बन्ध के बारे में आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के जाने माने रचयिता संग्राम लाल पाण्डे ने अपने पुस्तक में उद्धृत किया है। इस प्रकार विकार पराश्रित एवं परग्राह है वे आपस में एक दूसरे पर निर्भर है। अतः हम कह सकते हैं कि द्रव्य एक है, और विकार अनेक हैं, द्रव्य यदि कारण है तो विकार कार्य है। द्रव्य असीम है तो विकार ससीम है। द्रव्य नित्य है तो विकार अनित्य है यदि द्रव्य सामान्य है तो विकार विशेष है, द्रव्य उत्पत्ति और विनाश से परे है। लेकिन विकार उत्पन्न भी होता है और नष्ट भी होता है। द्रव्य यदि व्यापक है तो विकार व्याप्य है, द्रव्य यदि आधार है तो विकार आधेय

Scanned with CamScanner

है।

2. विकार और द्रव्य का सम्बन्ध आश्रित और आश्रयी का कहा गया है क्योंकि विकार द्रव्य पर ही आश्रित है। या निर्भर होता है। द्रव्य उन विकारों का अधिष्ठान और आश्रय होता है। यदि द्रव्य नहीं होता तो विकार भी न होते। जैसे- बिन्दु के बिना रेखाओं की कल्पना करना सम्भव नहीं है लेकिन रेखाओं के बिना बिन्दु की कल्पना करना सम्भव है। उसी प्रकार विकार के बिना द्रव्य रह सकता है लेकिन द्रव्य के बिना विकार नहीं रह सकता है। हीगेल (Hegel) दार्शनिक का कहना है कि विकार और द्रव्य यह एक आधार भूत तत्व है। उनका कहना है कि विकारों से उत्पन्न द्रव्य सिद्ध होता है। विकार द्रव्य की ओर हमें ले चलते हैं किन्तु द्रव्य के बिना विकार से सिद्ध नहीं हो सकता है। द्रव्य और विकार के सम्बन्ध में कारण और कार्य का ~~सम्बन्ध माना~~ व्यापक है क्योंकि कारण और कार्य दो वस्तुएँ हैं फिर भी स्पीनोजा का कहना है कि द्रव्य विकार के रूप में अनिवार्य रूप से अपने को अभिव्यक्त करता है। विकार भी वास्तविक है क्योंकि उसमें भी, अस्थायी ही सही सत्ता है अर्थात शुद्ध सत्ता का दूसरा नाम ही द्रव्य है।

3. स्पीनोजा ने विकार और द्रव्य के सिद्धान्तों के सम्बन्धों के बारे में स्पष्ट किया है कि विकारों और गुणों के बिना भी शुद्ध सत्तात्मक द्रव्य की धारणा (Concept) बन सकती है। पर विकारों की धारणा द्रव्य या गुण के प्रसंग में ही बन सकती है। विकार अनेक है, और द्रव्य एक है।

स्पीनोजा ने विकार की परिभाषा देते हुए कहा है कि "विकार पदार्थ का वह रूपान्तर है जो उसमें ही स्थित रहता है और उसकी धारणा किसी दूसरे तथ्य के द्वारा बनती है।"

"by Mode" Says Spinoza, "I understand affections of substance or that ~~which~~ which is in another, through which it is also Conceived."

4. स्पीनोजा ने दो प्रकार के विकारों को बतलाया है - (i) ससीम विकार (Finite modes) (ii) असीम विकार (infinite modes).

दो अनन्त गुणों के दो-दो अनन्त विकार होते हैं। और [illegible] [illegible]

परिवर्तनशील उत्पन्न होते है, कुछ अवधि तक रहते है और अन्त मे विलीन हो जाते है, और दूसरे उस रूप मे जिसमें वे ससीम वस्तु मात्र होते है।)

इसप्रकार अनन्त विकार के अनन्त स्थित (infinite rest) तथा अनन्त गति (infinite motion) के दो रूपान्तर है। अनन्त चिन्तन के अनन्त बुद्धि (Infinite reason) तथा अनन्त इच्छा-शक्ति (infinite will) दो अनन्त विकार होते है। इस तरह चार अनन्त विकार मानव बुद्धि मे आते है। ये अनन्त विकार नित्य है, सामान्य है (general), गुणाश्रित है (dependent on attributes), अनिवार्य है तथा अमूर्त प्रत्यय स्वरूप (abstract) है।

प्रत्येक अनन्त विकार सीमित वस्तुओं (finite objects) की समष्टि है। अनन्त गति अपने सारी ससीम गतियों को अन्तर्भावित कर लेती है। इसी तरह, अन्य अनन्त विकारों की स्थिति है। सान्त विकार अनित्य है, विशेष है (Particular), विकाराश्रित (dependent on other modes) है, संभाव्य (Probable) है तथा मूर्त रुप है। नित्य दृष्टि से देखने पर केवल एक और अद्वितीय द्रव्य दिखलाई पड़ता है। अनित्य दृष्टि से देखने पर उसके स्थान पर अनेक विकार दिखाई पड़ते है।

अत: इन दोनों दृष्टियों से देखने पर हमे ज्ञात होता है कि स्पीनोजावाद के आरम्भ और विकारों का इती (सम्पाती) मे विरोध नही है। वहॉं की एकता तथा अनेकता की प्रतिपादन है, द्रव्य के सभी विकारों की विधा एक नही उनकी दो विधायें है, कुछ विकारों की वैचारिक कुछ अवैचारिक है, विकार और विस्तार दो विधाये है। स्पीनोजा ने धर्म या गुण कहते है इनके माध्यम से विकार द्रव्य से निकलते है।

5. असीम विकार वास्तविक है, क्योकि वे असीम पदार्थ से सम्बन्धित है, ये गुण से ~~सम्बन्धित~~ सम्बद्ध है। पदार्थ और गुण का नाश नही होता है क्योंकि उनकी सृष्टि नहीं होती। यही बात असीम विकार के साथ है, लेकिन यह बात ससीम विकारों के साथ इसका सम्बन्ध नही है, क्योंकि ससीम विकारों का सम्बन्ध पदार्थ-गुण से होकर दूसरे अन्य ससीम विकारों से होता है। एक ससीम विकार अपनी अभिव्यक्ति के लिए दूसरे ~~ससीम~~ ससीम विकार का मोहताज है। इसकी सृष्टि होती है। इसलिए इसका नाश भी होता है। मनुष्य-जाति ससीम विकार है, उसके व्यक्ति ससीम विकार है। जाति (Species) का नाश नहीं होता, व्यक्ति

05

(individuals) आते ही जाते रहते हैं। सामान्य बना रहता है, विशेष नष्ट हो जाते हैं। बुद्धि और कृति-अशला मनुष्य-जाति तो सदा से चलती आयी और चलती रहेगी जायेगी, किन्तु मनुष्य-विशेष जन्म लेते हैं और मर जाते हैं। तरंगें तो उठती ही गिरती रहती हैं, पर सागर ज्यों-का-त्यों रहता है। उसी प्रकार शुद्ध सत्ता ज्यों-की-त्यों रहती है। अनेकता जन्म लेती और मिटती रहती है। स्पीनोजा ने असीम और ससीम विकारों में यही भेद प्रकट किया है।

6. स्पीनोजा का कहना है कि अनन्त विकार सान्त विकारों को जन्म देते हैं। लेकिन अन्य दार्शनिकों का आलोचना है कि अनन्त विकार से सान्त विकार क्यों उत्पन्न होते हैं? जबकि अनन्त से अनन्त की उत्पत्ति होती है। अनन्त सदा पूर्ण होता है। अनन्त विकार यदि पूर्ण है तो उनमें सान्त विकारों का अभाव नहीं हो सकता। वस्तुतः अनन्त विकार के उदर में सान्त विकारों का अभाव एक विरोधाभास है। अतः हम कह सकते हैं कि ससीम के बिना असीम पूर्ण नहीं हो सकता।

7. स्पीनोजा का कहना है कि साधनाबल से हमें शुद्ध सत्ता (Pure existence-consciousness and Order) का दर्शन हो जाता है तब अनेकता (विकारों का विश्व) मिट जाती है और मात्र एक ही ईश्वर कण-कण में व्याप्त नजर आता है तब उससे बौद्धिक प्रेम (intellectual Love) हो जाता है। सम्पूर्ण जड़, जीवन, चेतन, आत्म-चेतन आदि एक ही मूल की अनेक अभिव्यक्तियों के रूप में दीख पड़ते हैं। किसी से द्वेष और घृणा नहीं रह जाती, क्योंकि वे ईश्वरमयी हैं। अंश मिट जाते हैं, अंशी (Whole Substance) शेष रह जाता है। इस बौद्धिक प्रेम में भाव तत्त्व की अपेक्षा बुद्धि तत्त्व की प्रधानता है। ~~बि० रसेल दार्शनिक का कहना है कि बौद्धिक प्रेम में आनन्द (bliss) का भी तत्त्व है। ईश्वर-अंश जीव, चेतन, आत्मा को मानना ईश्वर-प्रेम है, जगत-प्रेम है जो भी कहें।~~

पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में सत्रहवीं शताब्दी में स्पीनोजा दार्शनिक एक दर्शनशास्त्र के एक बुद्धिवादी माने जाते हैं। उस समय पूरा विश्व मध्यकालीन विचारों के प्रति विद्रोह

Scanned with CamScanner

लहर फैल चुकी थी। इस विद्रोह की चिनगारी देकार्त के दर्शन में ही फूट पड़ी थी, और इस दर्शन में चमकाने का काम किया जो वह स्पीनोजा दार्शनिक है। वस्तुत: मैं मानता हूँ कि पाश्चात्य दर्शन के निर्माता अर्थात निर्माण कर्त्ता और बुद्धिवादी के जन्मदाता का नींव डालनेवाला भी कोई दार्शनिक हुआ है तो वह देकार्त है। स्पीनोजा का ईश्वरवाद में आरम्भ बिन्दु है (Starting Point) परन्तु स्पीनोजा दार्शनिक के ईश्वर यहूदी और इसाई दोनों से भिन्न होकर सर्वेश्वरवादी के रुप में मानते है। वे अद्वैत मत के अनुसार ईश्वर ही जगत है तथा जगत ही ईश्वर है। "हरिरेव जगत जगदेव हरि:।" वेदान्त के समान स्पीनोजा भी सम्पूर्ण प्रकृति को द्रव्य और द्रव्य को ईश्वर मानते है। अत: हम कह सकते है कि स्पीनोजा का विकार-वाद सिद्धान्त अन्य दार्शनिकों से भिन्न है, क्योंकि स्पीनोजा ने विकार और द्रव्य में अन्तर बताते हुए दोनों को अलग अलग एवं भिन्न भिन्न रुपों में दर्शाया। अत: हम कह सकते है कि स्पीनोजा का दर्शन न तो भौतिकवाद है और न प्रत्ययवाद है। क्योंकि स्पीनोजा का विकार और द्रव्य सिद्धान्त आश्रित और आश्रयी का है। ससीम विकार और असीम विकार दोनों का रुप है। अनन्त विकार और सान्त विकारों का रुपान्तर है। अत: हम कह सकते है कि द्रव्य एक है और विकार अनेक है, द्रव्य कारण है और विकार कार्य है, द्रव्य असीम है तो विकार ससीम है, द्रव्य नित्य है तो विकार अनित्य है, द्रव्य सामान्य है तो विकार विशेष है द्रव्य उत्पति एवं विनाश से परे है तो विकार उत्पन्न और भी होता है और नष्ट भी होता है, द्रव्य यदि व्यापक है तो विकार व्याप्य है, द्रव्य यदि आधार है तो विकार आधेय है।

अत: हम कह सकते है कि द्रव्य अपने में रहता है और अपने द्वारा ही समझा जाता है। विकार द्रव्य भी निक्रियाएं है

तो दूसरी वस्तुओं में रहता है और उसके द्वारा समझा जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि विकार पराश्रित और परआश्रित हैं और आपस में एक दूसरे पर निर्भर है।

The End